



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

अमगुणसमुप्याय दुःखमेव
विजाणिया।
समुप्यामजाणता, किह णहिति संवर ?
दुःख असंयम से उत्पन्न होता है-यह
ज्ञातव्य है। जो दुःख की उत्पत्ति को
नहीं जानते वे संवर (दुःख-निरोध)
को कैसे जानेंगे ?

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 38 • 26 जून - 2 जुलाई, 2023



• प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 24-6-2023 • पेज: 12 • ₹10



तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक

महामना आचार्यश्री भिक्षु

के 298वें जन्म दिवस एवं 266वें बोधि दिवस

पर श्रद्धासिक्त वंदन

आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशी (01 जुलाई 2023)

264वें तेरापंथ स्थापना दिवस

एवं गुरु पूर्णिमा

पर तेरापंथ की गौरवशाली

आचार्य परंपरा को

शत-शत वंदन

आषाढी पूर्णिमा (03 जुलाई 2023)



:: श्रद्धाप्रणतः :: तेरापंथ टाइम्स परिवार

जीवन जीने का परम लक्ष्य ऐसा हो कि आगे कभी जन्म लेना ही न पड़े : आचार्यश्री महाश्रमण

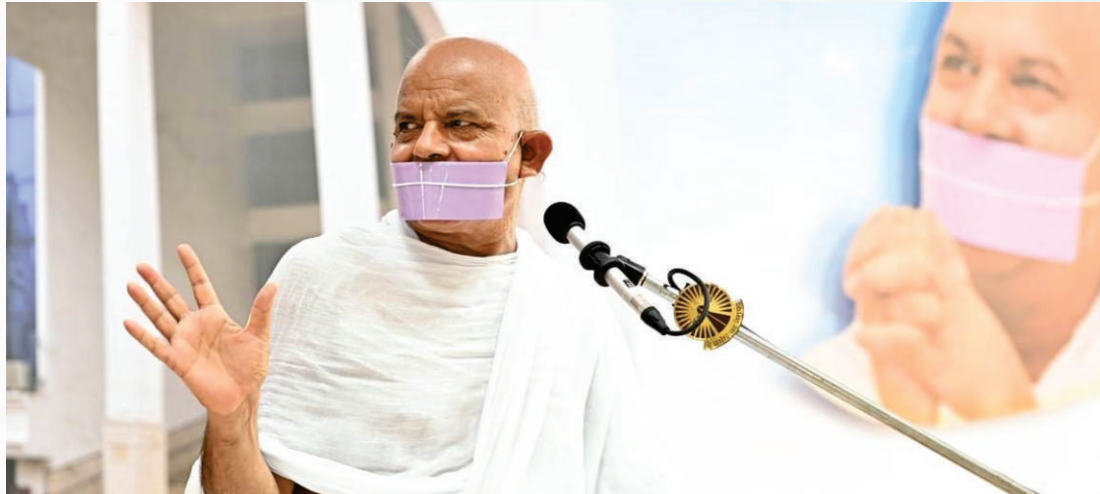
प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के 104वें जन्मदिवस का अयोजन

मलाड पश्चिम 16 जून 2023

शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ विहार कर मलाड पश्चिम पधारे। मंगल देशना प्रदान करते हुए महासंत ने फरमाया कि जीवन तो हर प्राणी जीता है। जीवन जीना बड़ी बात बात नहीं है। उद्देश्यपूर्ण जीवन जीना बड़ी बात है। उद्देश्य भी बढ़िया हो, प्रयोजन अच्छा हो। संसार में जन्म-मरण की परंपरा तो चलती रहती है। जीवन जीने का परम लक्ष्य यह होना चाहिये कि आगे कभी जन्म लेना ही न पड़े। अंतिम और परम लक्ष्य मोक्ष है, इसके लिए आत्म साधना आवश्यक है। रत्नत्रय की आराधना और कषाय मुक्ति की साधना आवश्यक है। वेशभूषा और संप्रदाय तो बाद की बात है।

आज आषाढ कृष्ण त्रयोदशी परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का 104वां जन्मदिवस है। टमकोर जैसे छोटे से गांव में वि.स. 1977 में उनका जन्म हुआ था। 11 वर्ष की अवस्था में सरदारशहर में पूज्य कालूराणी के हाथों दीक्षा हुई थी। मुनि तुलसी उनके शिक्षक रहे थे। आगे बढ़ते-बढ़ते वे एक विद्वान-दार्शनिक संत के रूप में सामने आये।

धर्मसंघ के विकास में वे आचार्यश्री तुलसी के सहयोगी रहे। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी



का विशाल साहित्य महाप्रज्ञ वाङ्मय के रूप में हमारे सामने है। अनेक विषयों पर उनका साहित्य है। आचार्यश्री तुलसी ने अपने जीवनकाल में ही उनको आचार्यपद पर आसीन कर दिया था। वे एक विलक्षण आचार्य थे। आगम संपादन के महान कार्य में उनका विशेष योगदान रहा था। प्रेक्षाध्यान-जीवन विज्ञान उनके अवदान रहे हैं। जैन योग पुनरुद्धारक के रूप में उनको संबोधित किया गया था।

जन्म लेना एक बात है, पर जीवन में कुछ अच्छा करना विशेष महत्व की बात है। आदमी को सत्पुरुषार्थ करना चाहिये। ऐसे संत-

पुरुषों से हमें प्रेरणा लेकर आगे बढ़ना चाहिये। लगभग 80 वर्षों का उनका संयम पर्याय रहा। मैं उनका स्मरण कर उनके प्रति श्रद्धा अर्पण करता हूं। उनके जीवन से लोगों को अपने जीवन का अच्छा लक्ष्य बनाकर आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती रहे।

साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के प्रति अपने श्रद्धाभाव अभिव्यक्त करते हुए फरमाया कि जिस आदमी को शुभ दीर्घ जीवन पर्याय मिलता है, वह महत्वपूर्ण होता है। शुभ दीर्घ

आयुष्य वह होता है, जिसके साथ सत्यं शिवं और सुंदरम की युति जुड़ जाती है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी को भी शुभ दीर्घ आयुष्य मिला था। उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली, तेजस्वी, ओजस्वी और वर्चस्वी था।

पूज्यवर के स्वागत में दत्तपत बाबेल, विद्यालय से डॉ. विनय जैन, संजीव नायक ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।



दुष्प्रवृत्ति में लगी हमारी आत्मा कभी मित्र नहीं बनती : आचार्यश्री महाश्रमण



कांदिवली, 14 जून 2023

कांदिवली प्रवास का दूसरा दिन। महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि शास्त्र में मित्र और मैत्री के संबंध में बताया गया है। मित्र के संबंध में बताया गया है कि हे पुरुष! तुम ही तुम्हारे मित्र हो, फिर क्या मित्र खोज रहे हो।

हमारी दुनिया में मित्र और शत्रु दोनों होते हैं। मित्रों के परस्पर छः व्यवहार हो सकते हैं। मित्र आपस में लेन-देन का व्यवहार करते हैं।

मित्र आपस में एक-दूसरे को गुप्त बात बता देते हैं। मित्र आपस में एक-दूसरे के घर साथ में खाना खा लेते हैं। एक शब्द है- कल्याण मित्र। एक मित्र दूसरे मित्र के कल्याण के बारे में परामर्श और सहयोग भी दे। साधु को भी निपुण सहायक मित्र न मिले तो अकेले रूप में साधना करो। कोई सहायक चित्त समाधि भी दे सकता है। यह एक बाह्य जगत में मित्रों का जगत चलता है। कई जगह मित्र न बनाने के लाभ भी हो सकते हैं।

मित्रता हो तो परिष्कृत उच्चस्तरीय मित्रता हो। अच्छा हित चिंतन-मंथन करें तो उसका महत्व हो सकता है। अध्यात्म की तो उंची बात है। क्यों किसी दूसरे को मित्र बनाओ, अपने आप को ही अपना मित्र बनाओ। अपनी आत्मा को तो हम अपना मित्र जरूर बनायें। आत्मा मित्र है और आत्मा अमित्र भी है। दुष्प्रवृत्ति में लगी हमारी आत्मा अमित्र है। सद्प्रवृत्ति में लगी हुई आत्मा मित्र बन जाती है। निश्चय नय से अध्यात्म की उच्च बात है

कि केवल आत्मा को ही मित्र बनाओ। दूसरे को मित्र बनाना व्यवहार नय और व्यवहार जगत की बात है। पुण्य प्रबल है तो कोई मार नहीं सकता। पाप प्रबल है तो कोई बचा नहीं सकता। दूसरों को मित्र बनायें या न बनायें पर हम आत्मा को अपना मित्र कैसे बनायें।

अगर जीवन में धर्म है तो आत्मा हमारी मित्र है। जीवन में अहिंसा, शांति, क्षमा का भाव और विनम्रता है तो आत्मा मित्र है अन्यथा आत्मा हमारी दुश्मन बन सकती है। मन में संतोष का भाव हो। हम अपनी आत्मा को अपना मित्र रखें या बनायें रखने का प्रयास करें। उसके लिए हमें अध्यात्म-धर्म की शरण में रहना होगा। अपने आप में रहने का अभ्यास करना होगा।

तुलसी पास गरीब के, को आवत को जात। एक विचारो श्वास है, आत जात दिन-रात। श्वास प्रेक्षा, स्वाध्याय को मित्र बनाया जा सकता है। सबके साथ अच्छा व्यवहार हो। हो सके तो किसी का कल्याण करने या चित्त समाधि देने का प्रयास करें। हो सके उतना संवर की साधना करें। संवर और निर्जरा हमारे बड़े

मित्र हो सकते हैं। साध्वीवर्याजी ने कहा कि हथोड़े चोट मारते हैं, अहरण सहन करती है। इसलिए जीवन में सहिष्णुता, सहनशक्ति का महत्व है। सहन करने वाला अपने अस्तित्व को बनाये रखता है। जो सहता है, वह महान बन जाता है। हमें महानता की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिये। सहनशीलता से क्षमा, सौहार्द, समता भी जीवन में आ सकती है। जो सहन करता है, वो पूज्य हो जाता है।

पूज्यवर की अभ्यर्थना में साध्वी निर्वाणश्रीजी (जिनका सन् 2022 का चतुर्मास कांदिवली में हुआ था) ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यवर के स्वागत में कांदिवली सभा अध्यक्ष पारसमल दूगड़, तेयुप अध्यक्ष नवनीत कच्छारा, तेरापंथ महिला मंडल से रचना हिरण, रवि मालू, संगायिका मिनाक्षी भूतोडिया, निर्मला बैद एवं सुशीला नाहटा ने अपने भाव व्यक्त किये। किशोर मंडल व कन्या मंडल की प्रस्तुतियां हुईं। कांदिवली की तीन ज्ञानशालाओं की सामूहिक प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।



आचार्यश्री महाप्रज्ञ के 104वें जन्मदिवस 'प्रज्ञा दिवस' के आयोजन

साधना की गहराई और चिंतन की ऊंचाई के संगम थे आचार्यश्री महाप्रज्ञ

बैंगलोर

कुमारा पार्क स्थित श्री महालक्ष्मी कल्याण भवन में आचार्य महाप्रज्ञ के 104 वें जन्मदिवस पर आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि हिमांशुकुमारजी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ का व्यक्तित्व साधना की गहराई और चिंतन की ऊंचाई का अद्भूत संगम था। आचार्यश्री महाप्रज्ञ के बहुआयामी व्यक्तित्व का परिचय देते हुए मुनिश्री ने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ अपने गुरु के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित थे। उनका समर्पण भाव हमारे लिए प्रेरणा है। उन्होंने बताया कि तेरापंथ के दशम आचार्यश्री महाप्रज्ञ के गुरु आचार्य कालू एवं आचार्य तुलसी उनके गुणों से प्रसन्न थे। आधुनिक योगी आचार्य महाप्रज्ञ ने समय-समय पर युग को नई दृष्टि प्रदान की। मुनिश्री ने आचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व के चार गुणों—समर्पण, विनय, चरित्रनिष्ठा एवं स्वयं विकास की चर्चा की। उन्होंने बताया कि ये गुण हमें अपने भीतर के महाप्रज्ञ को जगाने का मार्गदर्शन देते हैं।

इससे पूर्व मुनि हेमंतकुमारजी ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ के महान व्यक्तित्व का बीज उन्हीं के महान लक्ष्य में छिपा है। वे सदैव एक ही लक्ष्य को अपने सामने रखते कि मुझे आगे बढ़ना है। मुनिश्री ने अपने सौभाग्य की सराहना करते हुए बताया कि मुझे आचार्य महाप्रज्ञ के कर-कमलों द्वारा दीक्षित होने का अवसर प्राप्त हुआ। उनकी शिक्षाओं को बहुउपयोगी बताते हुए उन्हें जीवन का अभिन्न अंग बनाने का आह्वान किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए प्रज्ञा संगीत सुधा के गायकों ने युग-युग आभारी गीत को स्वर दिया। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष कमलसिंह दूगड़ ने गुरु उपदेश से प्राप्त शिक्षा के अनुसार जीवन जीने की बात कहते हुए अपनी श्रद्धा की अभिव्यक्ति दी।

जागृत प्रज्ञा के पुरोधा आचार्यश्री महाप्रज्ञ

जसोल

'शासनश्री' साध्वी सत्यप्रभाजी के सानिध्य में संस्था शिरोमणी जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के निर्देशन में तेरापंथी सभा जसोल के तत्वावधान में तेरापंथ के दशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का 104वां जन्मदिवस 'प्रज्ञा दिवस' के रूप में मनाया गया।

'शासनश्री' साध्वी सत्यप्रभाजी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ की शक्तियों का उल्लेख करते हुए कहा कि उनके व्यक्तित्व में शक्ति, प्रवचन में शक्ति, साहित्य में शक्ति, हृदय परिवर्तन में शक्ति, भावों में निर्मलता-शुद्धता लाने की शक्ति, अधार्मिक को धार्मिक बनाने की शक्ति, पाप कर्मों से विमुक्त करने की शक्ति, आध्यत्मिक साधना से प्रवृत्त करने की शक्ति, मानव को महामानव बनाने की शक्ति जैसी विलक्षण शक्तियां थीं।

अहिंसा के प्रबल पक्षधर, प्रचारक, सत्यम-शिवम-सुंदरम के साक्षात् स्वरूप, अपनी बुद्धिमता, संवेदना, सहिष्णुता, साधना, दार्शनिकता, आध्यत्मिकता और शीतलता से जन सामान्य के हृदय पटल पर अपना एक स्थान बनाने वाले महान आचार्य थे— आचार्यश्री महाप्रज्ञ। साध्वी ध्यानप्रभाजी ने महान संत योगी आचार्यश्री महाप्रज्ञ के बारे में बताते हुए कहा कि जिन्होंने कभी स्कूल का दरवाजा तक नहीं देखा पर महान शास्त्रवेत्ता बन गए। वे एक दार्शनिक एवं तार्किक थे, पर श्रद्धा उनमें कूट-कूट कर भरी थी। वे एक कवि थे पर गांभीर्य उनका स्वभाव था। साध्वी यशस्वीप्रभाजी ने भी आचार्यश्री महाप्रज्ञ के संदर्भ में अपने प्रेरणादायक विचार रखे।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों द्वारा महाप्रज्ञ अष्टकम मंगलाचरण से हुआ। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा जसोल अध्यक्ष उगमराज तातेड़, सिवांची मालाणी तेरापंथ संस्थान अध्यक्ष डूंगरचंद सालेचा, तेरापंथी महासभा जोधपुर संभाग प्रभारी गौतमचन्द्र सालेचा, उपासक मोतीलाल जीरावला, लीलादेवी छाजेड़, तेयुप के पूर्व अध्यक्ष प्रवीण भंसाली सहित प्रबुद्ध वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा सामूहिक गीत का का संगान किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन कांतिलाल डेलडिया ने किया।



अभातेयुप योगक्षेम योजना

* अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
* श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
* श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
* श्री राकेश कठोतिया, लाडनू-मुंबई	5,00,000
* श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
* श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
* श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
* श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
* श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
* श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
* श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
* श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छाप-सिलीगुड़ी	5,00,000
* श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
* श्री विमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
* श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000



अपने संस्कार : अपनी निधि जैन संस्कार विधि

गृह प्रवेश संस्कार

लिलुआ

बेलूड़ तेरापंथी सभा अध्यक्ष शुभकरण दुगड़ के पुत्र हेमंत-सिम्मी दुगड़ (श्रीडूंगरगढ़ निवासी, बेलूड़ प्रवासी) का गृह प्रवेश तिरुपति अपार्टमेंट, बेलूड़ में जैन संस्कार विधि से संस्कारक मालचन्द्र भंसाली एवं अरूण नाहटा द्वारा पूरे मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया।

हेमंत ने एक वर्ष के प्रतिदिन सामायिक व स्वाध्याय करने का और सिम्मी ने 'धम्मो मंगल मुक्किठम' की प्रतिदिन एक माला फेरने का संकल्प लिया। शुभकरण दुगड़ ने तेरापंथ युवक परिषद्, लिलुआ एवं संस्कारकों का आभार प्रकट किया एवं प्रोत्साहित किया।

तेयुप लिलुआ की ओर से अध्यक्ष अमित बांठिया ने पूरे दुगड़ परिवार और संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया व उनको बहुत-बहुत साधुवाद दिया। तेयुप लिलुआ के कार्यकर्ता जय बांठिया ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

शुभारंभ संस्कार

साउथ हावड़ा

सुजानगढ़ निवासी साउथ हावड़ा प्रवासी अमरचंद चोरड़िया के सुपुत्र नोरत चोरड़िया के नए फैक्ट्री का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा के सहयोग से आयोजित हुआ। संस्कारक बजरंग लाल डागा एवं गगन दीप बैद ने सम्पूर्ण जैन मंत्रोच्चार से फैक्ट्री ऋषभ इंटरप्राइज का उद्घाटन करवाया।

मंगल भावन की स्थापना परिषद् उपाध्यक्ष हितेंद्र बैद ने परिवारिकजनों के साथ की। परिवार की ओर से विकाश बरमेचा ने परिषद् एवं संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया।

उदासर

अभयराज, अंकित, तरुण महनोत के नूतन प्रतिष्ठान रिद्धि सिद्धि कास्मेटिक का मंगल शुभारंभ जैन संस्कार विधि के जैन संस्कारक पवन छाजेड़ और देवेन्द्र डागा ने विधि विधान पूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न करवाया और साथ ही मौजूद सभी लोगों से अपने मांगलिक अवसरों को जैन संस्कार विधि से मनाने का निवेदन किया।

जैन संस्कारक देवेन्द्र डागा ने महनोत परिवार को नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ करने की बधाई प्रेषित की। प्रकाश भंसाली ने परिवार की ओर से तेयुप व संस्कारकों का आभार प्रकट किया।

सभी ने तेयुप गंगाशहर द्वारा आयोजित हुए जैन संस्कार विधि के कार्यक्रम की सराहना की। मंगल पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

विवाह संस्कार

गंगाशहर

दिल्ली निवासी पदमचन्द्र कोठारी की सुपुत्री मनीषा का शुभ विवाह बीकानेर निवासी प्रवीण कुमार सेठिया के भाई प्रभात कुमार सेठिया के साथ गौड़ी पार्श्वनाथ मंदिर, बीकानेर में जैन संस्कार विधि से सानंद संपन्न हुआ। जैन संस्कारक रतन लाल छलाणी, भरत गोलछा ने विवाह संस्कार का सारा मांगलिक आयोजन विधि विधानपूर्वक तथा मांगलिक मंत्रोच्चार एवं आध्यात्मिक भजनों के संगान के साथ सम्पन्न करवाया। सहयोगी के रूप में तेयुप गंगाशहर के सदस्य रोहित बैद उपस्थित रहे। इस दौरान उपस्थित दोनों परिवारों की तरफ से जैन संस्कारकों का शानदार आयोजन के लिए आभार प्रकट किया।

कार्यक्रम के दौरान गणमान्यजनों और पारिवारिक लोगों की अच्छी उपस्थिति रही। इस दौरान जैन संस्कार विधि से सम्बंधित जानकारी को भी साझा किया गया। जैन संस्कारक भरत गोलछा ने दोनों परिवारों को शुभ विवाह की बधाई प्रेषित की और वर-वधु को उनके उज्ज्वल भविष्य का आशीर्वाद प्रदान किया। सभी ने तेयुप गंगाशहर द्वारा आयोजित हुए जैन संस्कार विधि के कार्यक्रम की सराहना की।

सगाई संस्कार

गंगाशहर

'श्री संस्कारक' धर्मेन्द्र-कुसुम डाकलिया की सुपुत्री सी.ए. प्रज्ञा व सी.ए. दर्शन पुत्र अशोक-मधु नाहटा (गंगाशहर निवासी बैंगलोर प्रवासी) के सगाई समारोह का मांगलिक आयोजन जैन संस्कार विधि से सम्पन्न कराया गया।

संस्कारक सूर्यप्रकाश, सामसुखा, प्रकाश डाकलिया, प्रदीप लालाणी, पवन छाजेड़ ने जैन संस्कारक के रूप में और संजय चोरड़िया सहयोगी के रूप में जुड़े। सारा मांगलिक आयोजन विधि विधान पूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार सहित आध्यात्मिक गीतों के संगान के साथ संपन्न हुआ।

इस अवसर पर समाज के गणमान्य लोगों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही। जैन संस्कारक पवन छाजेड़ ने दोनों परिवारों को बधाई दी और मंगल पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। डाकलिया परिवार की तरफ से प्रकाश डाकलिया ने सभी संस्कारकों और इस अवसर पर उपस्थित सभी का आभार प्रकट किया।

मनोनुशासनम्

* आचार्य तुलसी *



दूसरा अंग - निरभ्र आकाश की ओर टकटकी लगाकर देखते जाइए। थोड़े समय में चित्त विचार-शून्य हो जाएगा।

तीसरा अंग- केवल कुम्भक का अभ्यास कीजिए। मन विचार-शून्य हो जाएगा। चौथा अंग मानसिक विचारों को समेटकर हृदय-चक्र की ओर ले जाइए। फिर गहराई में उतरने का अनुभव कीजिए। ऐसा करते ही चित्त विचार-शून्य हो जाएगा।

पांचवां अंग - आत्मा या चैतन्य केन्द्र की धारणा को दृढ़ कर उसके साच्चिध्य का अनुभव कीजिए। वह सहज शान्त और निर्विचार हो जाएगा।

इस प्रकार अनेक हैं, जिनके द्वारा निर्विचार ध्यान को सुलभ बनाया जा सकता है किन्तु उन सब में सर्वाधिक महत्वपूर्ण पद्धति है- अप्रयत्न - प्रयत्न का विसर्जन, प्रवृत्ति का सर्जन।

२७. शुद्ध चैतन्यानुभवः समाधिः ॥

-शुद्ध चैतन्य के अनुभव को समाधि कहा जाता है।

२८. विकल्पशून्यत्वेन चित्तस्य समाधानं वा ॥

-विकल्पशून्यता होने पर चित्त समाहित हो जाता है, उसे भी समाधि कहा जाता है।

२९. संतुलन वा ॥

-संतुलन को भी समाहित कहा जाता है।

३०. रागद्वेषाभावे चित्तस्य समत्वं संतुलनम् ॥

-रागद्वेष के अनुदय में चित्त की समता का प्रकट होना संतुलन है।

३१. समत्व- विनय - श्रुत-तपश्चारित्रभेदात् स पञ्चधा ॥

-समाधि के पांच प्रकार हैं- . समत्व . विनय . श्रुत . तप . चारित्र

३२. रागद्वेष-विकल्पशून्यत्वात्, मान- विकल्पशून्यत्वात्, चित्तस्थैर्यानुभवात्, भेद-विज्ञानानुभवात्, समत्वादीनिसमाधिपदवाच्यानि ॥

- समत्व में रागद्वेषात्मक विकल्प नहीं होता इसलिए उसे समाधि कहा जाता है। विनय में अभिमान का विकल्प नहीं होता इसलिए उसे समाधि कहा जाता है। श्रुत में चित्त की स्थिरता का अनुभव होता है। इसलिए उसे समाधि कहा जाता है। तप और चारित्र में भेद-विज्ञान का अनुभव होता है इसलिए उन्हें समाधि कहा जाता है।

समाधि

समाधि का अर्थ है- चित्त की एकाग्रता और उसका निरोध महर्षि पतंजलि ने अष्टांग योग में धारणा, ध्यान और समाधि-इन तीन अंगों का प्रतिपादन किया है।

बौद्ध साधना पद्धति में समाधि का अर्थ चित्त और चैतन्य का दृढ़ स्थिरीकरण है। मन ध्यान वस्तु में स्थिर हो जाता है, क्योंकि मन के साथ रहने वाले मानसिक तथ्य (चैतन्यिक) पवित्र होते हैं और वे मन को स्थिर होने में सहयोग देते हैं दृढ़ स्थिरीकरण का अर्थ है-मन का एक वस्तु में स्थिर होना इसमें और किन्हीं बाधाओं और दोषों का समावेश नहीं होता।

जैन साधना पद्धति में समाधि का अर्थ है- शुद्ध चैतन्य का अनुभव या चित्त का समाधान या चित्त का सन्तुलन। धारणा, ध्यान और समाधि-ये तीनों एक ही तत्त्व की तीन अवस्थाएं हैं। धारणा का प्रकर्ष ध्यान और ध्यान का प्रकर्ष समाधि है। धारणा चित्त की एकाग्रता से शुरू होती है, ध्यान में एकाग्रता परिपुष्ट हो जाती है और समाधि में वह निरोध की अवस्था में बदल जाती है।

चित्त की एक वृत्ति के शान्त होने पर दूसरी वृत्ति उसी के अनुरूप उठे और उस प्रकार की अनुरूप वृत्तियों का प्रवाह चलता रहे, उसका नाम चित्त की एकाग्रता है चित्त की मूढ़ अवस्था में राग और द्वेष का उदय प्रबल होता है, इसलिए उसमें संतुलित एकाग्रता नहीं होती। उस अवस्था में असंतुलित एकाग्रता आतं और रौद्र ध्यान की एकाग्रता हो सकती है किन्तु आत्मिक विकास के लिए उसका कोई उपयोग नहीं है। वह दोषपूर्ण एकाग्रता है। वह संतुलित चित्त की एकाग्रता में बाधक बनती है। विक्षिप्त और यातायात चित्त की एकाग्रता सामयिक होती है। जिस समय चित्त में स्थिरता प्रकट होती है, उस समय अस्थिरता तिरोहित हो जाती है। कुछ समय बाद अस्थिरता आती है और स्थिरता चली जाती है। इन दोनों भूमिकाओं के साधक कभी अपने को समाधि अवस्था में अनुभव करते हैं और कभी असमाधि अवस्था में उनका आचरण बार-बार बदलता रहता है। श्लिष्ट और सूलीन चित्त की इन दो भूमिकाओं में एकाग्रता का मूल सुदृढ़ होता है। श्लिष्ट चित्त की एकाग्रता को धारणा और सुलीन चित्त की एकाग्रता को ध्यान कहा जा सकता है। इन दोनों को एक शब्द में धर्म्यध्यान कहा जा सकता है। चित्त की छठी भूमिका निरुद्ध है। इसे शुक्ल-ध्यान कहा जा सकता है। शुक्ल ध्यान को उत्तम समाधि, धर्म्यध्यान को मध्यम समाधि और धारणा को प्राथमिक समाधि कहा जा सकता है। धर्म्यध्यान की एकाग्रता चिरस्थायी होती है इसलिए उससे मन समाहित हो जाता है, वशीभूत हो जाता है उसे बाधाएं परास्त नहीं कर सकती। शुक्लध्यान में चित्त का चिरस्थायी निरोध हो जाता है। उससे वृत्तियां क्षीण होती हैं। धारणा में चित्त संतुलित होता है, ध्यान में समाहित और समाधि में केवल चैतन्य का अनुभव शेष रहता है।

समाधि के पांच प्रकार अभ्यास की दृष्टि से किए गए हैं। रागात्मक और द्वेषात्मक विकल्प से शून्य चित्त की अवस्था में समाधि उत्पन्न होती है। इस दृष्टि से समाधि का कोई भेद नहीं होता किन्तु वह विकल्प-शून्य अवस्था में अनेक अभ्यासों और प्रयोगों के द्वारा प्राप्त की जा सकती है इसलिए उसे कई भागों में विभक्त भी किया जा सकता है।

समाधि का एक प्रयोग है समत्व। लाभ-अलाभ, सुख-दुःख आदि द्वन्द्वों में सम (उदासीन या तटस्थ) रहने का अभ्यास करते-करते राग और द्वेष के विकल्प शान्त हो जाते हैं-चित्त समाहित हो जाता है।

चित्त की असमाधि का हेतु है-अभिमान। मनुष्य जितना परिग्रही होता है, उतना ही अभिमानी होता है-परिग्रह का अर्थ है-मूर्च्छा, आसक्ति। जो वैभव, सत्ता आदि पदार्थों में मूर्च्छित होता है और यह मानता है-मेरे पास वैभव है, अधिकार है, मेरे पास यह है, वह है। ऐसा मानने वाला अभिमान के विकल्प से भरा रहता है। समाधि चाहने वाला परिग्रह को छोड़ता है- मूर्च्छा और का परित्याग करता है। फिर वह इस भावना का अभ्यास करता है कि मेरा कुछ भी नहीं है। इस अभ्यास से उसके अभिमान विकल्प का विलय हो जाता है। उसे चित्त-समाधि प्राप्त हो जाती है।

जिससे चित्त चंचल होता है, वह ज्ञान समाधि का हेतु नहीं होता। समाधि चित्त की स्थिरता में ही निष्पन्न होती है। विकल्प और अशान्ति दोनों साथ-साथ जन्म लेते हैं। जैसे-जैसे विकल्प बढ़ते जाते हैं, वैसे-वैसे अशान्ति बढ़ती जाती है। विकल्प को करने का पहला उपाय है- चित्त की एकाग्रता। जैसे-जैसे अन्तरात्मा का बोध जागृत होता है, वैसे-वैसे हमारी चेतना बाह्य वस्तुओं से विरत शजाती है और चित्त एकाग्र हो जाता है। हम सूचनात्मक ज्ञान का संकलन करें या न करें, यह यहां प्रस्तुत नहीं है। हम अपने अन्तश्चैतन्य को जागृत करें और उससे जो श्रुत (ज्ञान) की धारा प्रवाहित हो, उसका उपयोग करें। चित्त अपने आप समाहित होगा।

चेतना और शरीर- ये दोनों परस्पर मिले हुए हैं। स्थूल शरीर बदलता रहता है किन्तु सूक्ष्म शरीर और चेतना - ये दोनों धाराप्रवाह रूप में जुड़े रहते हैं। चेतना के द्वारा शरीर को ज्ञान का आलोक और शक्ति प्राप्त होती है। शरीर के द्वारा चेतना को अभिव्यक्ति मिलती है और शक्ति के प्रयोग का क्षेत्र मिलता है। दोनों पारस्परिक सहयोग के कारण अभिन्न जैसे प्रतीत होते हैं। यह अभेद बोध ही चेतना के शरीर निरपेक्ष विकास में अवरोध पैदा करता है। इस अभेद बोध की में राग और द्वेष पनपते हैं। उनके संस्कार चित्त को चंचल बनाए रहते हैं। उस चंचलता को मिटाने का एक महत्वपूर्ण सूत्र है- भेद-विज्ञान - चेतना और शरीर में भिन्नता का बोध।

शरीर और चेतना भिन्न हैं- यह हमने सुना या पढ़ा। हमें बोध हो गया कि शरीर अचेतन है, आत्मा चेतन है इसलिए वे दोनों भिन्न हैं। यह बोध केवल श्रुति-बोध है। इस बोध को हम साधना का आदि बिन्दु बना सकते हैं किन्तु इसे निष्पत्ति नहीं मान सकते। इस श्रुति-बोध को स्वयं का बोध बनाने के लिए दो प्रयोग किए जाते हैं- एक तप का और दूसरा चरित्र का हम कम खाते हैं या कुछ दिनों तक नहीं खाते। शरीर के लिए खाना जरूरी है और हम नहीं खाकर उसके नियम का अतिक्रमण करते हैं। उस अतिक्रमण का शरीर विरोध करता है। उस विरोध के काल में यदि हम भेद-ज्ञान का अनुभव कर चेतना को मुख्यता देते हैं तो भेद-विज्ञान अभ्यास के स्तर पर आ जाता है। हम आसन साधते हैं शरीर की मांग नहीं है कि हम दो या तीन घंटा एक आसन में बैठे रहें। हम ध्यान करते हैं। बाह्य वातावरण से हट जाते हैं और ज्ञात विषयों की विस्मृति हो जाती है। हम आने वाली हर कठिनाई को हंसते-हंसते झेल लेते हैं। ये सब तप और चरित्र के प्रयोग भेद-विज्ञान के प्रयोग हैं। इनके द्वारा हमारा भेद- विज्ञान पुष्ट होता है। हम इस बिन्दु पर पहुंच जाते हैं कि जो अप्रिय लग रहा है, कष्ट हो रहा है, वह सब दैहिक संस्कार के कारण हो रहा है। चेतना के धरातल पर कोई अप्रिय नहीं है, कोई कष्ट नहीं है। यह अनुभूति पुष्ट होकर चित्त की चंचलता पैदा करने वाली सभी बाधाओं को विलीन कर देती है और चित्त समाहित हो जाता है।

३२. कृष्णादिद्रव्यसाचिव्यादात्म परिणामो लेश्या ॥

-कृष्ण, नील आदि पुद्गल द्रव्यों के निमित्त से जो आत्म-परिणाम होता है, उसे लेश्या कहा जाता है।

३३. कृष्ण-नील- कापोत-तेजः-पद्म-शुक्लाः ।

-लेश्या के छह प्रकार हैं -

1. कृष्ण
2. नील
3. कपोत
4. तेजस्
5. पद्म
6. शुक्ल

लेश्या

मनुष्य का शरीर पौद्गलिक है। उसके इन्द्रिय और सहायक मन भी पौद्गलिक हैं। उसकी सारी प्रवृत्तियों में पुद्गल का बहुत बड़ा योग रहता है।

पुद्गल के चार लक्षण हैं वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श। इन चारों में पहला वर्ण - रंग है। वर्ण के पांच प्रकार हैं- काला, पीला, नीला, लाल और सफेद। इनके मिश्रण से अनेक रंग उत्पन्न होते हैं। आधुनिक वैज्ञानिक रंग के सात प्रकार मानते हैं- लाल, हरा, पीला, आसमानी, गहरा नीला, काला और हल्का नीला।

उनके अनुसार सफेद रंग मौलिक नहीं है। वह सात रंगों के एकीकरण से बनता है।

रंगों का प्राणी-जीवन के साथ बहुत गहरा सम्बन्ध है। ये हमारे शरीर तथा मानसिक विचारों को भी प्रभावित करते हैं। लेश्या के सिद्धांत द्वारा इसी प्रभाव की व्याख्या की गई है।

वैज्ञानिक परीक्षणों के द्वारा रंगों की प्रति पर काफी प्रकाश डाला गया है। देखिए यंत्र-

नाम	प्रति
लाल	गर्म
नारंगी	गर्म
लाल-नारंगी	बहुत गर्म
पीला	गर्म किन्तु लाल-नारंगी से कम
हल्का गुलाबी	गर्म
गाढ़ा गुलाबी	गर्म
बादामी	गर्म
हरा	न अधिक गर्म, न अधिक ठंडा
नीला	ठंडा



संबोधि

* आचार्य महाप्रज्ञ *

मिथ्या सम्यक् ज्ञान मिमांसा

विद्वत्ता के साथ आचरण भी आप, यह जरूरी नहीं है, किन्तु सम्यग् ज्ञान के साथ रूपांतरण निश्चित है। ज्ञान शक्ति है। वह यथार्थस्वरूप आपके सामने प्रस्तुत करेगा। उसे आप स्वीकार करेंगे तो निःसन्देह रूपांतरित होंगे। अन्यथा उस ओर आप आंख बन्द कर लेंगे। धर्म के वास्तविक स्वरूप-ध्यान से डरने का और क्या है? वह जितनी कुरूप प्रतिमाएं छिपी हैं उन्हें प्रकाश में लाता है। इसलिए आपका वैसा रहना असंभव हो जाता है। वे मिथ्या प्रतिमाएं खंडित होगी या फिर आप पीछे हट जाएंगे।

ज्ञान से ही जो मुक्ति की बात कहते हैं-वह केवल सत्य के संबंध में सीखे हुए ज्ञान की बात है, न कि साधना द्वारा उपलब्ध ज्ञान की। महावीर के युग में ऐसी मान्यता थी, इसलिए उन्हें यह घोषणा करनी पड़ी कि विविध भाषाओं का बोध आदमी को नहीं दे सकता उसे सम्यग् ज्ञान की आराधना करनी होगी। सम्यग-दर्शन, सम्यग् ज्ञान, सम्यग् आचरण-इस त्रिवेणी में डुबकी लगाकर ही व्यक्ति कल्मष से छूट सकता है।

जैन दृष्टि से मोक्ष के उपाय हैं-सम्यग् दर्शन, सम्यग् ज्ञान, सम्यग् आचरण और सम्यग् तप। दर्शन सबका आधार है। दर्शन के अभाव में अन्य साधनों की उपादेयता नग है आधार सु हुआ कि भवन का निर्माण अचिर काल में हो सकता है। दर्शन की स्वीति नहीं हो सकती है, उसकी आराधना होती है। यह कोई वस्तु नहीं है कि जिसका आदान प्रदान किया जा सके। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी करनी होती है।

दर्शन का अर्थ है-देखना प्रश्न होगा कि क्या देखें? जो हम देखते हैं वह भी दर्शन है, किन्तु वह सम्यग् नहीं। क्योंकि उससे हम दृश्य को ही देखते हैं। सम्यग् दर्शन तब घटित होता है जब आपके सामने कोई दृश्य न हो, जो देखने वाला है उसे आप देखें यह सम्यग् दर्शन है। सब दृष्टियां खो जाएं, केवल द्रष्टा रहे। शुद्ध निश्चय की भाषा में आचार्यों ने इसे ही सम्यग् दर्शन कहा है। योगसार में लिखा है-

आत्मा दर्शन, ज्ञान गुण, आत्म गुण चारित्र।

आत्मा संयम, शील, तप, प्रत्याख्यान पवित्र।

किसी अन्य आचार्य ने कहा है-

स्व धी स्व ने जीव जाणता, सम्यग् दृष्टि थाय।

सम्यग् दृष्टि जीव तो, कर्ममुक्त झट थाय।।

जड़ और चेतन के मध्य का सघन आवरण सम्यग् दर्शन के द्वारा विनष्ट होता है। सम्यग् दर्शन के आलोक में स्व-पर का स्पष्ट बोध उद्घाटित होता है। आगे का पथ फिर स्वतः सरल और स्पष्ट हो जाता है। मृगापुत्र ने अपने माता-पिता से कहा- 'जैसे घर में आग लग जाने से गृहस्वामी अपनी बहुमूल्य वस्तुओं को बाहर निकालता है और तुच्छ को छोड़ देता है, ठीक इसी प्रकार मैं भी देखता हूँ, मेरे घर में भी अग्नि की लपटें उठ रही हैं। घर धूँ-धूँ जल रहा है। अग्नि है-वृद्धत्व और मौत की। मैं चाहता हूँ तुम्हारी आज्ञा लेकर अपनी महामूल्यवान् आत्मा को बचाना।'

जिसे दर्शन होता है उसके जीवन में यह अवश्यंभावी घटने वाली घटना है। जो दूसरों को दिखाई नहीं देता, वह उसे दिखाई देता है। अब कैसे वह अपने को प्रप्रश्न में उलझाए रख सकता है? दर्शन के साथ ही ज्ञान की घटना घटती है। और उसके साथ ही चारित्र (स्व में अवस्थित होने का भाव जागृत हो जाता है। स्व में होना तप है और वह पूरी प्रक्रिया भी तप है जिसके द्वारा स्व में अवस्थान होता है। संक्षेप में महावीर की यही साधना पद्धति है। दर्शन उसका केन्द्र है। ध्यान दर्शन के लिए है या दर्शन ही ध्यान है। दर्शन के निष्कर्ष हैं-शम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा और आस्तिक्य।

शम का अर्थ है-शांति। शांति सम्यग् दृष्टि की झलक है। जिससे यह बोध होता है कि व्यक्ति को भीतर कुछ प्राप्त है। अशांति के जनक क्रोध, अहंकार, राग-द्वेष आदि हैं। सम्यग् दर्शन की स्थिति में इनका अस्तित्व शांत हो जाता है।

संवेग का अर्थ है- दुःख मुक्ति के लिए तीव्र उत्साह। जैसे-जैसे स्व-धारा का वेग वर्धमान होता है वैसे-वैसे साधक के चरण उस दिशा में और अधिक गतिशील हो जाते हैं। मंजिल पर पहुंचे बिना उसे चैन नहीं मिलता।

(क्रमशः)

अवबोध

* मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनू' *

प्रश्न २०. कर्म के दृष्टान्त कौन से हैं?

उत्तर : कर्म के आठ दृष्टान्त हैं-

ज्ञानावरणीय कर्म - आंख की पट्टी के समान

वेदनीय कर्म - मधुलित तलवार की धार के समान

आयुष्य कर्म - खोड़े के समान

गोत्र कर्म - कुम्हार के समान

दर्शनावरणीय कर्म - प्रहरी के समान

मोहनीय कर्म - मद्यपान के समान

नाम कर्म - चित्रकार के समान

अंतराय कर्म - भंडारी (कोषाध्यक्ष) के समान

प्रश्न २०. कषाय के सोलह उदाहरण कौन से हैं?

उत्तर : कषाय के सोलह उदाहरण हैं-

अनन्तानुबंधी क्रोध - पत्थर की रेखा के समान

अनन्तानुबंधी माया - बांस की जड़ के समान

अप्रत्याख्यानी क्रोध - भूमि की रेखा के समान

अप्रत्याख्यानी माया - मेंढे के सींग के समान

प्रत्याख्यानी क्रोध - बालू की रेखा के समान

प्रत्याख्यानी माया - चलते बैल के मूत्र की धार के समान

संज्वलन क्रोध - जल की रेखा के समान

संज्वलन माया - छिले हुए बांस की छाल के समान

अनन्तानुबंधी मान - पत्थर के स्तम्भ के समान

अनन्तानुबंधी लोभ - मि - रेशम के रंग के समान

अप्रत्याख्यानी मान - अस्थि के स्तम्भ के समान

अप्रत्याख्यानी लोभ - कीचड़ के रंग के समान

प्रत्याख्यानी मान - काष्ठ के स्तम्भ के समान

प्रत्याख्यानी लोभ - गाड़ी के खंजन के समान

संज्वलन मान - लता के स्तम्भ के समान

संज्वलन लोभ - हल्दी के रंग के समान

(क्रमशः)

उपासना

* आचार्य महाश्रमण *

श्राविका सुलसा



राजगृह नगर के महाराज श्रेणिक के एक प्रीतिपात्र रथिक का नाम नाग था और नाग की पत्नी का नाम सुलसा था। सुलसा पतिपरायणा दृढधर्मिणी नारी थी। भगवान् महावीर की परम श्राविकाओं में उसका प्रमुख स्थान था। इतना सबकुछ होते हुए भी उसके कोई सन्तान नहीं थी। सन्तान की चिन्ता नाग के मन में भी थी तथा सुलसा के मन में भी। फिर भी इसे अपने तकमों का परिपाक मानकर सुलसा धर्मध्यान में समय बिताती थी। नाग को दूसरा विवाह न करने का नियम था। सुलसा सन्तान- प्राप्ति के लिए कोई भी धर्मविमुख उपक्रम या अनुष्ठान करने को तैयार नहीं थी। पूर्ण समताशील होकर जीवन बिता रही थी।

एक बार देवेन्द्र ने देवसभा में सुलसा की समता की सराहना करते हुए कहा- सुलसा इतनी समता वाली है, चाहे उसकी कोई कितनी ही हानि कर दे परन्तु उसे क्रोध नहीं आता।

उसकी परीक्षा लेने एक देव साधु का रूप बनाकर सुलसा के घर आया। सुलसा ने बन्दना की। आहार पानी लेने की प्रार्थना की। साधु ने कहाभोजन देने वाले तो और भी नगर में बहुत मिल जायेंगे। मुझे तो तेरे यहां से लक्षपाक तेल लेना है। परम प्रसन्न बने सुलसा लक्षपाक तेल का घट उठाकर लाई। घड़ा ज्यों ही उठाया, देव ने अपनी माया से गिराकर फोड़ दिया। इसी प्रकार दूसरा, तीसरा घड़ा भी फोड़ दिया। फिर भी सुलसा न कुपित हुई और न ही कीमती वस्तु के विनष्ट होने पर व्यक्ति ही।

अफसोस व्यक्त करते हुए मुनि बोले- श्मेरे योग से तेरा इतना नुकसान हुआ है। सुलसा ने अपनी सहजता से कहा- श्मुनिवर ! इसकी मुझे चिन्ता नहीं है। परन्तु आपकी आवश्यकता की औषधि नहीं दे सकी, इसका खेद अवश्य है। देव ने उसकी तितिक्षा देखकर अपने असली रूप में प्रकट होकर सारी बात कहीशून्द्र द्वारा प्रशंसित है। मैं परखने आया था परन्तु तू परख में खरी सिद्ध हुई। मैं प्रसन्न हूँ, इच्छित वर मांग। सुलसा ने कहा- सही धर्म मुझे मिला हुआ है और मुझे किसी वस्तु की अपेक्षा नहीं है। फिर भी देव के देने का अल्याग्रह देखकर सुलसा ने कहा- यदि देना ही चाहते हो तो एक पुत्र हो, ऐसा उपाय बताइये। श्शआप देव ने प्रसन्न होकर बत्तीस गोलियां दीं। एक-एक गोली से एक-एक पुत्र हो आयेगा ऐसा कहा और उसकी प्रशंसा करता हुआ अन्तर्धान हो गया।

सुलसा ने सोचा- मुझे बत्तीस पुत्रों की क्या आवश्यकता है? अच्छा होगा, बत्तीस गोलियां एक साथ ही खा लूँ जिससे बत्तीस लक्षणों वाला एक पुत्र ही हो जायेगा। ऐसा विचारकर बत्तीस गोलियां एक साथ खा लीं।

संयोगवश बत्तीस जीव गर्भ में आये। जब गर्भ बढ़ने लगा तो सुलसा दर्द होना ही था। सुलसा ने देव को याद किया। देव ने सान्त्वना दी। ऐसा करने के लिए टोका भी। खैर, यथासमय सभी पुत्रों का सकुशल प्रसव देव ने करा दिया। यह अवश्य कहा ये सभी पुत्र एक साथ ही मृत्यु को प्राप्त होंगे।

बड़े होने पर इन सब का विवाह कर दिया गया। के हरण के समय सुरंग में इन सभी पुत्रों का एक साथ ही अवसान हो गया। पुत्रों की मृत्यु से सुलसा को शोक तो हुआ पर वह समताशील थी। उसने पुत्रों की मृत्यु को भाग्य की लीला माना तथा उनकी मृत्यु के बाद अपनी धर्म-श्रद्धा में और अधिक दृढ हो गई।

एकदा में भगवान् महावीर का उपदेश सुनने अंबड संन्यासी गया। उपदेश सुनकर जाने लगा तब बोला- मैं राजगृह जा रहा हूँ। कभी मौका हो तो आप भी राजगृह पधारने की पा करना।

भगवान् ने प्रसंगवश कहा वहां सुलसा श्राविका है, वह श्रद्धा में बहुत दृढ है।

अंबड वैक्रियलब्धिसम्पन्न संन्यासी था। मन में आया, भगवान् ने जिसकी सराहना की है उसकी परीक्षा तो कर ही लेनी चाहिए। वह राजगृह आकर अपने लब्धि के योग से लोगों को प्रभावित करने के लिये पूर्व दिशा के द्वार पर ब्रह्मा का रूप बनाकर उपस्थित हो गया। हजारों-हजारों व्यक्ति गये परन्तु सुलसा नहीं गई, यों क्रमशः दक्षिण, पश्चिम, उत्तर के दरवाजे पर भी विष्णु, शंकर तथा अन्तिम दिन भगवान् महावीर का रूप बनाकर भी समवसरण की रचना की। सुलसा तो फिर भी नहीं गई। महावीर बने अंबड ने स्वयं सुलसा के घर जाकर पूछासुलसा! तू मेरे दर्शनार्थ क्यों नहीं आई? क्या मैं भगवान् महावीर नहीं हूँ?

सुलसा ने कहा-'हां! आप भगवान् महावीर नहीं हैं। इसीलिए मैं नहीं आई और न ही आऊंगी।'

अंबड-'क्यों, मैं भगवान् महावीर क्यों नहीं हूँ?

सुलसा-'भगवान् महावीर की आंखें क्रोध से कभी लाल नहीं होती हैं। आपकी आंखें लाल हो रही हैं।'

अंबड मन ही मन झेंपा। अपना मूल रूप प्रगट कर उसने भगवान् की कही हुई सारी बात कही तथा कहा-तू कसौटी पर खरी उतरी। इसकी मुझे परम प्रसन्नता है। सुलसा ने भी साधर्मिक भाई को अपने घर आया देखकर प्रसन्नता व्यक्त की। भगवान् का सुख-संवाद पूछा। दृढधर्मिणी सुलसा ने अंत में सभी पापों की आलोचना करके समाधिकरण प्राप्त किया स्वर्ग में गई। वहां से च्यव करके आने वाली चौबीसी में निर्मम नाम से पन्द्रहवां तीर्थकर होगी।

(क्रमशः)

जीवन को समुन्नत बनाने और सुधारने का मूलाधार है सत्संग

चंडीगढ़

हरियाणा राज्य के पूर्व सीएम भूपेंद्रसिंह हुड्डा से मुनि विनयकुमारजी आलोक ने शिष्टाचारक भेंट की। इस दौरान पूर्व सीएम हुड्डा ने मुनिश्री से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए कहा मनीषीसंत त्याग व संयम की मूर्त रूप हैं। इतनी लंबी आयु में भी मनीषीसंत के अंदर नौजवानों जैसी फूर्ति व कार्य के प्रति लगन देखते ही बनती है। मनीषीसंत के हर रोज अखबारों में प्रवचन पढ़ने को मिलते हैं, वे लगातार आज की युवा पीढ़ी को ज्ञान की अलख लौ जगा रहे हैं।

मुनि विनयकुमारजी आलोक ने कहा कि जीवन को समुच्चत बनाने और सुधारने के लिए सत्संग मूलाधार है। जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति में सत्संग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। सत्संग क्या है? इस संसार में तीन पदार्थ- ईश्वर, जीव और प्रकृति सत है। इन तीनों के बारे में जहां अच्छी तरह से बताया जाए, उसे सत्संग कहते हैं। श्रेष्ठ और सात्विक जनों का संग करना, उत्तम पुस्तकों का सत्संग, पवित्र और धार्मिक वातावरण का संग करना, यह सब सत्संग के अंतर्गत आता है। सत्संग हमारे जीवन के लिए उतना ही आवश्यक है, जितना कि शरीर के लिए भोजन। भोजनादि से हम शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेते हैं, किंतु आत्मा जो इस शरीर की मालिक है, उसकी संतुष्टि के लिए कुछ नहीं करते।

जीवन में सत्संग का सर्वाधिक प्रभाव होता है, क्योंकि उससे आपके अन्तः और बाह्य व्यक्तित्व का संवर्धन होता है। सत्संग की अवधारणा है, जो लोग समाज को स्वस्थ दिशा में ले जाने में समर्थ हैं, उनके पास बैठकर 'जीने और जीने देने की कला' का ज्ञान ग्रहण करना। ऐसे जन प्रबुद्ध कहलाते हैं। सबसे पहले आप ऐसे लोगों की पहचान और परख कीजिए फिर विनम्र भाव से उनका साच्चिध्य प्राप्त करने का प्रयास कीजिए। इससे स्वयं में गुणात्मक परिवर्तन पायेंगे। ऐसे प्रबुद्धजन आपको वर्तमान

स्वस्थ जीवनशैली है- अणुव्रत

इस्लामपुर

मुनि प्रशांतकुमारजी, मुनि कुमुदकुमारजी के साच्चिध्य में अणुव्रत गोष्ठी का आयोजन हुआ। जनसभा को सम्बोधित करते हुए मुनिश्री प्रशांत कुमारजी ने कहा- गुरुदेवश्री तुलसी का उदात्त व्यापक दृष्टिकोण का परिणाम मानव जाति के लिए अणुव्रत का अवदान दिया। मानवीय गुणों की सुरक्षा के लिए ही अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात्र किया। अणुव्रत सर्व कल्याण का पथ है। देश का अच्छा विकास हो सके इसलिए पूज्य गुरुदेव ने भगवान महावीर द्वारा बताए गए सिद्धांतों को आमजन के लिए सरल भाषा में प्रस्तुत किया। श्रावक को बारह व्रत को अपना लेना चाहिए। जिसने बारहव्रत को अपना लिया वे अणुव्रत के नियम को अपने आप पालन कर लेता है। हर श्रावक को श्रावक जीवन की पालना के लिए बारह व्रत की पालना अनिवार्य है। भगवान महावीर के समय राजा चेटक हुए, जो बारह व्रती श्रावक थे। अच्छे इंसान अच्छे नागरिक को जीवन में व्रतों को ग्रहण कर सम्यक् जीवन जीना चाहिए। सभी को सबसे पहले अणुव्रत को समझना जरूरी है। अणुव्रत के नियम बंधन नहीं अपितु स्वस्थ जीवन शैली है। गुरुदेवश्री तुलसी ने मानव जाति के कल्याण के लिए लगभग एक लाख किलोमीटर की पदयात्रा कर अणुव्रत का प्रचार-प्रसार किया। नियम, कानून के दायरे से बंधा व्यक्ति अपराधिक प्रवृत्ति की ओर कम जाता है। साम्प्रदायिकता से परे इस कार्य से इंसानियत की भावना जागृत रहती है इसलिए उन्होंने कहा 'इंसान पहले इंसान फिर हिन्दू या मुसलमान।' व्यक्ति अपने स्वार्थ के वशीभूत मानवता की हत्या कर देता है।

मुनि कुमुदकुमारजी ने कहा- अणुव्रत जीवन जीने की कला है। अपने जीवन को हम सही चिंतन, स्वस्थ जीवनशैली से जीने के लिए अणुव्रत को जीवन में आत्मसात् करें। अणुव्रत भगवान महावीर का श्रावक को दिया गया अवदान है। श्रावक के जीवन में त्याग, प्रमाणिकता, अहिंसा, नैतिकता की चेतना हर समय जागृत रहनी चाहिए। नियम हमारे लिए सुरक्षा का काम करते हैं। नियम, व्यवस्था से व्यक्ति परिवार, समाज एवं राष्ट्र अनेकानेक समस्या से बच जाता है। अणुव्रत के नियम अगर हर समाज राष्ट्र में व्यक्ति अपनाते लग जाए तो देश का सर्वांगीण विकास हो सकता है। समाज सुधार का यह कार्य जितना व्यापक बने उतना देश स्वस्थ बनेगा।

महिला मंडल ने अणुव्रत गीत की प्रस्तुति दी। अणुव्रत समिति अध्यक्ष शकुंतला दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। आभार ज्ञापन मनीषा बोथरा ने किया।

संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन

शिविर ज्ञान, ध्यान, नैतिक शिक्षा के बीजारोपण में बनेगा सहयोगी

सरदारपुरा (जोधपुर)

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान एवं श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा सरदारपुरा (जोधपुर) की आयोजना में समणी डॉ. मंजूप्रज्ञाजी एवं समणी स्वर्णप्रज्ञाजी के निर्देशन में संस्कार इंटरनेशनल स्कूल के प्रांगण में पंच दिवसीय संस्कार निर्माण शिविर का सफलतम आयोजन हुआ। शिविर में कोलकाता से मोटिवेशनल स्पीकर जयश्री डागा , अहमदाबाद से ध्यान एवं योगा विशेषज्ञ मीनल चोपड़ा एवं जोधपुर से लता ललवानी पधारे और शिविरार्थियों को जीवन विकास के सूत्र बताए।

इस शिविर की प्रभारी श्रीमती कनक बैद, जिनके अत्यधिक श्रम एवं कुशल नेतृत्व में महिला मंडल सदस्या कुसुम, योगिता, ललिता, सविता तातेड़, महिला मंडल अध्यक्ष शरिता कांकरिया आदि संपूर्ण बहनों ने अपना योगदान देकर इसे सफल बनाया। शिविर की प्रत्येक गतिविधि को बहिन स्वाति मेहता ने अपना पूरा समय देकर सुनियोजित तरीके से निष्पादित किया।

समापन के दिन अनेक शिविरार्थी बालिकाओं ने अपने भाव व्यक्त किए इनमें प्रिशा एवं आर्या ने अपने विचार रखते हुये कहा कि प्रत्येक तीन महीने में शिविर का आयोजन होता रहे ताकि हम गुरुदेव के सपनों को साकार करने वाले मुमुक्षु बन सके। इस शिविर में आदर्श बच्चों के रूप में तुषि, गुनगुन, आर्या एवं प्रिशा के नाम का चयन किया गया। त्याग, सामायिक एवं मौन की साधना की प्रतियोगिता में बायतु से प्रज्ञा भंसाली, कोमल भंसाली एवं फलसुंड से रचना ने प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया। आज्ञा, अनुशासन की दृष्टि से फलसुंड की बालिकाओं ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इंटरनेट के इस युग में पाली की बालिकाओं ने मोबाइल फोन का सर्वथा प्रयोग वर्जन रखकर 'आत्मसाधना का प्रथम स्थान' प्राप्त किया।

प्रतिदिन विविध सत्रों में विषयों पर समणी डॉ. मंजूप्रज्ञाजी एवं समणी स्वर्णप्रज्ञाजी एवं मुमुक्षु दीप्ति ने विविध विषयों पर पीपीटी के माध्यम से बहुत सुन्दर एवं कुशल शैली के साथ अपनी अभिव्यक्ति दी।

इस कार्यक्रम के समापन के अवसर पर श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के निवर्तमान अध्यक्ष माणक तातेड़, पूर्व अध्यक्ष उम्मेद सिंघवी, वरिष्ठ श्रावक दौलतमल सिंघवी, सभा के सदस्य निर्मल बैद आदि उपस्थित थे। तेरापंथी सभा मंत्री महावीर चोपड़ा ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन प्रियंका बैद एवं अर्चना वुरुड़ ने किया।

पंचदिवसीय इस शिविर में संस्था शिरोमणि जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा उपाध्यक्ष विजयराज मेहता एवं महासभा कार्यकारिणी सदस्य गौतम छाजेड़, धनराज ओसवाल के अथक श्रम की महत्वपूर्ण भूमिका रही एवं तेरापंथी सभा जोधपुर अध्यक्ष सुरेश जीरावला, उपाध्यक्ष दिनेश कोठारी, मंत्री महावीर चोपड़ा, कोषाध्यक्ष गिरीश मेहता का महत्वपूर्ण योगदान रहा। तेयुप सरदारपुरा अध्यक्ष कैलाश तातेड़ आदि उनकी पूरी टीम का सफलतम योगदान रहा। पंचदिवसीय शिविर में लगभग 165 संभागियों ने भाग लिया। इसमें सिवांची मालाणी क्षेत्र से बालोतरा, जसोल, पचपदरा, असाड़ा, आसोतरा, फलसूंड, बायतु, बाड़मेर, जोधपुर, पाली, आदर्शनगर, सवाईमाधोपुर से काफी अच्छी संख्या में शिविरार्थियों ने भाग लिया।

सुसंस्कार की नींव है – ज्ञानशाला

टांलीगंज

मुनि जिनेशकुमारजी के साच्चिध्य व टांलीगंज तेरापंथी सभा के तत्वावधान में जैन स्थानक में नई ज्ञानशाला का शुभारंभ व जैन विद्या प्रमाण पत्र वितरण का कार्यक्रम हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेशकुमारजी ने कहा- जो विचार सहृदय में अवस्थित हो जाते हैं, उसका नाम संस्कार है। संस्कार हमारे जीवन की संपदा है। संस्कार जीवन की धरोहर है। सुसंस्कार से जीवन आबाद हो जाता है। कुसंस्कार से जीवन बर्बाद हो जाता है। सुसंस्कार की नींव ज्ञानशाला है। ज्ञानशाला के माध्यम से बालक अपना अच्छा विकास कर सकता है। जैन धर्म, तेरापंथ आदि परंपराओं का अच्छा ज्ञान कर सकता है और साधार्मिक वात्सल्य का विकास होता है। मुनिश्री ने आगे कहा- सुसंस्कारों के जागरण से व्यक्ति का भाग्योदय सर्वोदय हो सकता है। गुरुदेव तुलसी ने भावी पीढ़ी को सुसंस्कारी व चारित्रवान बनाने के लिए ज्ञानशाला का आयाम समाज को दिया। ज्ञानशाला के माध्यम से अनेक ज्ञानार्थी साधु बनकर संघ की सेवा कर रहे हैं। ज्ञानशाला से निकला हुआ बालक श्रेष्ठ इंसान-श्रावक भी हो सकता है। बच्चे कोरे कागज के समान होते हैं। उसमें चाहे जैसा रंग भर सकते हैं। मुनि जिनेशकुमारजी ने कहा- समण संस्कृति द्वारा आयोजित जैन विद्या पाठ्य कार्यक्रम का ज्यादा से ज्यादा अध्यन करना चाहिए। ज्ञान से वैराग्य की अभिवृद्धि होती है।

टांलीगंज सभा अध्यक्ष अशोक पारख, ज्ञानशाला आंचलिक संयोजिका डॉ. प्रेमलता चोरड़िया, मुख्य प्रशिक्षिका सरोज पारख एवं ज्ञानशाला के बच्चों ने अपनी प्रस्तुति दी। जैन विद्या सह आंचलिक संयोजिका वंदना डागा, स्नेहलता बागरेचा, केन्द्र व्यवस्थापिका सुषमा सुराणा, निधी जैन, संचालन ज्ञानशाला संयोजक विवेक सेठिया ने किया। सह व्यवस्थापक अजय आंनद पुगलिया आदि गणमान्य व्यक्ति विशेष रूप से उपस्थित थे।

दीक्षार्थी मंगल भावना कार्यक्रम का आयोजन

टांलीगंज कोलकाता

जैन कार्यवाहिनी कोलकाता द्वारा महासभा भवन में जैन कार्यवाहिनी के सदस्य उपासक संजय पारख की सुपुत्री दीक्षार्थी संजना पारख का मंगलभावना कार्यक्रम रखा गया। मंगलभावना कार्यक्रम का शुभारंभ जैन कार्यवाहिनी की भिक्षु भजन मंडली ने मंगलाचरण से किया। जैन कार्यवाहिनी के प्रचार संयोजक पंकज दुधोड़िया ने दीक्षार्थी बहन का संक्षिप्त परिचय दिया। जैन कार्यवाहिनी के समन्यवक महेंद्र दुधोड़िया, दीक्षार्थी बहन के पिता संजय पारख, गजेंद्र नाहटा ने अपने विचार रखे।

दीक्षार्थी बहन संजना पारख ने अपने सारगर्भित वक्तव्य में गोशालक का प्रसंग बताते हुए कहा कि हमें गुरु की कमी निंदा नहीं करनी चाहिए। हमारा यह सौभाग्य है कि हमें आचार्य महाश्रमणजी जैसे गुरु मिले हैं। दीक्षार्थी बहन ने जैन कार्यवाहिनी के कार्यवाहकों से आह्वान करते हुए आगे कहा कि हम 4 दीक्षार्थी बहनों को 29 जून 2023 को युगप्रधान आचार्य महाश्रमणजी से मिलने वाली समण दीक्षा के उपलक्ष्य पर हमारी तरफ से अपने गुरु को एक भेंट स्वरूप अपने दीक्षा दिवस से प्रारंभ करते हुए सभी से एक छोटे से त्याग की मांग है, वह भी कम से कम 1 दिन का त्याग करना है, वह त्याग है वाचिक हिंसा का त्याग अर्थात वाणी व्यवहार में किसी को कष्ट नहीं देने का प्रयास इस त्याग की श्रृंखला से सभी जुड़े।

इसके पश्चात जैन कार्यवाहिनी की तरफ से दीक्षार्थी बहन का खोल भरा गया। मंगल भावना कार्यक्रम का कुशल संचालन संयोजक पुष्पराज सुराणा ने किया।



:: महिला मंडल के विविध आयोजन ::

तेरापंथ के विकास पुरुष आचार्यश्री तुलसी कोयंबदूर

तेरापंथ महिला मंडल कोयंबदूर के तत्वावधान में आचार्यश्री तुलसी का 27वां महाप्रयाण दिवस विसर्जन दिवस के रूप में डॉ. साध्वी गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वी गवेषणाश्रीजी ने नमस्कार महामंत्र के द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की। साध्वीजी द्वारा जप का प्रयोग व अनासक्ति की अनुपेक्षा करवाई गई। स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल ने तुलसी अष्टकम का संगान किया।

साध्वी गवेषणाश्रीजी ने अपने मंगल उद्बोधन में फरमाया कि तुलसी का युग स्वर्णिम युग था। वो एक संघर्ष की कहानी थी। अनासक्ति की चेतना का जीवंत उदाहरण है- आचार्य तुलसी। उन्होंने अपने आचार्य पद का विसर्जन किया। वे तेरापंथ के विकास पुरुष थे। साध्वीजी ने अपने प्रेरक वक्तव्य में स्थानीय भाई-बहनों को विसर्जन की प्रेरणा दी।

साध्वी मयंकप्रभाजी ने भी अपनी ओजस्वी वक्तव्य में कहा कि आप युगदृष्टा, भविष्यदृष्टा, आत्मदृष्टा पुरुष थे।

साध्वी दक्षप्रभाजी ने सुमधुर गीतिका के द्वारा अपनी प्रस्तुति दी। तेरापंथ महिला मंडल व तेरापंथ युवक परिषद् ने संयुक्त गीतिका की प्रस्तुति दी।

'कन्यादान क्यों?' इस विषय पर कन्या मंडल की सहप्रभारी श्रीमती वंदना पारेख व श्रीमती मुक्ता नखत ने अपने विचार रखे। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष मंजू गिड़िया, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष उत्तमचंद पुगलिया, ट्रस्ट के अध्यक्ष नगराज नाहटा, तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष मनोज बाफना, उपासिका सुशीला बाफना व मुमुक्षु अंजली सिंघवी ने आचार्यश्री तुलसी के जीवन पर अपने-अपने सारगर्भित विचार व गीतिका के द्वारा अपनी प्रस्तुति दी।

साध्वी मेरुप्रभाजी द्वारा कुशल संयोजन किया गया। आभार ज्ञापन मंत्री आरती रांका ने किया। इस अवसर पर लगभग 150 भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

कन्यादान आखिर क्यों? प्रतियोगिता का आयोजन

जालना

गुरुदेव श्री तुलसी के 27वें महाप्रयाण दिवस का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल ने किया। कार्यक्रम का सूत्र संचालन संजना सेठिया ने किया। मंत्री सीमा सेठिया ने स्वागत भाषण दिया। सभी वक्ताओं ने गीत व भाषण के माध्यम से प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के अतिथि तेरापंथी सभा अध्यक्ष सुनील सेठिया, तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष परेश धोका, उपासक पवन सेठिया एवं एडवोकेट अभय सेठिया का जालना महिला मंडल द्वारा सम्मान किया गया।

कन्यादान आखिर क्यों? का आयोजन हासन

तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में आचार्यश्री तुलसी का 27वां महाप्रयाण दिवस विसर्जन दिवस के रूप में हर्षोल्लास से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ बहनों ने तुलसी अष्टकम से किया। अध्यक्ष संगीता कोठारी ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि हमें इस मंगल दिवस पर आडंबर का, व्यक्तिगत संग्रह का, समय का, ममत्व का विसर्जन कर अध्यात्म को अपनाते का प्रयास ही आचार्यश्री तुलसी के श्री चरणों में सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

गुरुदेव तुलसी को स्मरण करते हुए दस मिनट तक सामूहिक जाप किया गया और उसके बाद विसर्जन चेतना को जगाने का प्रयोग किया गया। 50 बहनों ने परिग्रह विसर्जन संकल्प फॉर्म भरे।

'कन्यादान आखिर क्यों?' पर भाषण प्रतियोगिता रखी गई, जिसमें सपना सुराणा ने कन्यादान का मतलब बताते हुए कहा- कन्या कोई वस्तु नहीं कि उसका दान हो उसका तो आदान होता है। नम्रता सुराना ने कन्यादान संस्कृत का शब्द है- देना। हमें विचार करने योग्य बात है कि कन्या का ही दान क्यों?।

संतोष भंसाली ने कहा कि कन्यादान इसलिए किया जाता क्योंकि वह इतनी सक्षम और मजबूत है कि वह कहीं कार्य करके भी दो घर को संभाल लेती है।

सूरज तातेड़ ने कहा कि पिता के गोत्र से पति के गोत्र में बदलती है। कन्यादान होते ही पिता का हक नहीं रहा ऐसी सोच ना रहे। संजू बरलोटा ने कहा कि अलौकिक तुष्टि में सबसे बड़ा दान कन्यादान है, दूसरे परिवार को जिम्मेदारी सौंपने का नाम है- कन्यादान।

ममता कोठारी ने गुरुदेव तुलसी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा- विसर्जन दो प्रकार के होते हैं- बाह्य परिग्रह विसर्जन और आंतरिक परिग्रह विसर्जन। इसके साथ ही उन्होंने कार्यक्रम का सुंदर संचालन किया।

आचार्य पद का विसर्जन कर दिया जगत को विसर्जन का महान सूत्र

चेन्नई, नार्थ टाउन

गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी का 27वां महाप्रयाण दिवस अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल चेन्नई के तत्वावधान में शासनश्री साध्वी शिवमालाजी ठाणा-4, साध्वी लावण्याश्रीजी ठाणा-3, समणी डॉक्टर ज्योतिप्रज्ञाजी एवं मानसप्रज्ञाजी के सान्निध्य में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्रीजी द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ। देवांशु पारख ने मंगलाचरण का सुंदर संगान किया।

शासनश्री साध्वी शिवमालाजी ने गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी के विराट व्यक्तित्व की विशेषताओं को विरल बताते हुए अपने जीवन से जुड़े अनेक प्रसंगों का उल्लेख धर्मसभा में प्रस्तुत किए। साध्वी लावण्याश्रीजी ने गुरुदेव तुलसी द्वारा प्रदत्त विसर्जन सूत्र की व्याख्या करते हुए, उसी सूत्र को अपनाने की, जीवन में आत्मसात करने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता समणी डॉ. ज्योतिप्रज्ञाजी ने 'अनासक्त चेतना का विकास कैसे हो' एवं गुरुदेव तुलसी के अनुपम अवदान की व्याख्या करते हुए तुलसी शब्द के इंग्लिश में पांच शब्द को विश्लेषण करते हुए जीवन की विशेषताओं को बताया।

साध्वीजी ने सात मिनट जाप करवाया। साध्वीवृंद व समणीवृंद द्वारा गीतिका का सुंदर संगान हुआ। चेन्नई महिला मंडल की अध्यक्ष पुष्पा हिरण ने उपस्थित सभी का स्वागत करते हुए महिला मंडल की ओर से गुरुदेव श्री तुलसी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। महिला मंडल द्वारा विसर्जन दिवस के उपलक्ष्य में सुंदर गीतिका की प्रस्तुति रही।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा चेन्नई अध्यक्ष उगमराज सांड, अभातेममं राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्या माला कातरेला, तमिलनाडु अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य प्यारेलाल पितलिया, साहुकारपेट ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी विमल चिप्पड़, ट्रिप्लीकेन से गौतमचन्द सेठिया, नार्थ टाउन तेरापंथ परिवार से अध्यक्ष राजकरण बैद, महावीर संचेती, वरिष्ठ श्रावक सोहनलाल खाटेंड, मुमुक्षु कोमलबाई आदि गणमान्य व्यक्ति ने अपने विचार व्यक्त किए। नार्थ टाउन के भाइयों ने विसर्जन दिवस के उपलक्ष्य में गीतिका प्रस्तुत की। तुलसी अष्टकम का संगान मंत्री रीमा सिंघवी ने किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी अमितरेखाजी ने किया।

महिला मंडल की ओर से मंत्री रीमा सिंघवी ने एवं नार्थ टाउन के मंत्री पुखराज पारख ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। उपस्थित सभी को विसर्जन दिवस के उपलक्ष्य में संकल्प पत्र दिए गए एवं भरने की प्रेरणा दी गई। साध्वीश्रीजी के मंगल पाठ से कार्यक्रम का समापन हुआ।

कन्यादान आखिर क्यों? प्रतियोगिता का आयोजन

चेन्नई, नार्थ टाउन

गुरुदेवश्री तुलसी के 27वें महाप्रयाण दिवस के उपलक्ष्य में अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल, चेन्नई के तत्वावधान में मंगलवार रात्रिकालीन कार्यक्रम भाषण प्रतियोगिता 'कन्यादान आखिर क्यों?' विषय पर प्रतियोगिता का आयोजन साध्वी शिवमालाजी ठाणा-4 एवं समणी डॉ. ज्योतिप्रज्ञाजी एवं समणी मानसप्रज्ञा के सान्निध्य में बिन्नी मिल में रखा गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा

नमस्कार महामंत्र से हुआ। साध्वी अमितरेखाजी एवं समणी मानसप्रज्ञाजी ने दान को जैन परंपरा के आधार पर उसके अनेकों महत्व बताते हुए कन्याओं को गुरु चरणों में दान करने की प्रेरणा दी। अध्यक्ष पुष्पा हिरण ने स्वागत स्वर प्रस्तुत करते हुए कन्यादान के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्या माला कातरेला ने कन्यादान विषय पर प्रकाश डालते हुए उसके महत्व को सभी के समक्ष प्रस्तुत किया। मुकेश रांका ने कन्यादान पर कविता प्रस्तुत की। सभी प्रतियोगियों ने अपने अपने तरीके से कन्यादान आखिर क्यों? विषय पर अपने भाव व्यक्त किए।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया निधि आच्छा, द्वितीय स्थान दीक्षा मालू एवं तृतीय स्थान पर मनाली गोलेछा रही। सभी प्रतियोगियों को महिला मंडल की ओर से पुरस्कृत किया गया। इस प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका निभाई सहमंत्री लता पारख एवं कोषाध्यक्ष हेमलता नाहर ने।

कार्यक्रम की संयोजिका राजेश्वरी रांका का इस कार्यक्रम में विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री रीमा सिंघवी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन राजेश्वरी रांका ने दिया। इस कार्यक्रम में नार्थ टाउन परिवारों का महिला मंडल को भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। साध्वीश्रीजी के मंगल पाठ से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

स्वस्थ समाज के निर्माण का महत्वपूर्ण सूत्र है-विसर्जन

जयपुर

अखिल भारतीय महिला मंडल द्वारा निर्देशित तथा तेरापंथ महिला मंडल जयपुर द्वारा आयोजित युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी का 27वां महाप्रयाण दिवस 'विसर्जन दिवस' के रूप में मनाया गया। 'शासन गौरव' साध्वी कनकश्री ने स्थानीय तिलकनगर के सौभाग्यविला में आयोजित इस महत्वपूर्ण संगोष्ठी में विसर्जन की चेतना जगाने की प्रेरणा दी। साध्वीश्रीजी ने ममत्व विसर्जन, आसक्ति विसर्जन की प्रेरणा देते हुए अनावश्यक संग्रहवृत्ति को कम करने की प्रेरणा दी। इसके लिए इच्छाओं का अल्पीकरण व भोगोपभोग का संयम करना अत्यन्त जरूरी है।

विसर्जन को स्वस्थ समाज की संरचना का मौलिक प्रकल्प बताते हुए साध्वीश्री ने कहा कि विद्वान और साधु-संतों जैसों के लिए भी अहंकार व सत्ता का त्याग करना बहुत कठिन है। गुरुदेव तुलसी ने उस समय आचार्यपद का त्याग कर युवाचार्य महाप्रज्ञ को आचार्यपद पर प्रतिष्ठित कर दिया, जिस समय उनका तेज और प्रताप दोपहर के सूरज की भांति प्रखरता से तप रहा था। अ. भा. ते. म. मंडल की पूर्व अध्यक्ष पुष्पा बैद ने अपने मंजे हुए विचार प्रस्तुत करते हुए बहनों को भोगोपभोग सामग्री के अल्पीकरण की तथा विसर्जन की प्रेरणा दी। 'हमारी जीवन यात्रा हल्केपन के साथ हो और हमारा यात्रा-पथ

ज्योतिर्मय हो' यह चिंतन संगोष्ठी के प्रथम सत्र की मुख्य थीम रही।

संगोष्ठी के दूसरे सत्र की चर्चा का विषय था 'कन्यादान क्यों?' पुष्पा बैद ने विषय पर अपने महत्वपूर्ण विचार रखे। प्रासंगिक विषय पर चर्चा स्पर्धा में प्रतियोगी सुमन बोरड प्रथम विजेता रही। कौशलया जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। विजेता प्रतियोगी बहनों को मंडल की तरफ से सम्मानित, पुरस्कृत किया गया। संगोष्ठी में बहनों का उत्साह और उल्लास शुभ भविष्य का सूचक था। कार्यक्रम की सफलता में अध्यक्षानिर्मला सुराणा का जागरूक श्रम बोल रहा था।

साध्वी कनकश्रीजी ने विशेष प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए कहा- चालू वर्ष जहां देश की आजादी का अमृत महोत्सव वर्ष है, वहां 'अणुव्रत' का भी अमृत महोत्सव वर्ष है, साथ ही महान अध्यात्म विभूति युगप्रधान आचार्य महाश्रमण का 50वां दीक्षा कल्याण महोत्सव वर्ष है। अतः अपेक्षा है हम सब संयम-तप व त्याग के द्वारा स्वयं को ऊर्जावान बनाएं। ध्यान, स्वाध्याय आदि आध्यात्मिक उपक्रमों द्वारा अपनी आंतरिक शक्तियों को जगाएं।

साध्वी मधुलताजी ने दीक्षा कल्याण वर्ष में गुरुदेव द्वारा श्रावक-श्राविकाओं के लिए निर्दिष्ट साधना सूत्रों को विस्तार से समझाया और संयम-त्याग के अभ्यास की प्रेरणा दी।

शुभ भविष्य है सामने कार्यशाला का अयोजन

चेन्नई

साध्वी लावण्याश्रीजी आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में 'शुभ भविष्य है सामने' कार्यशाला का भव्य आयोजन रखा गया। कार्यक्रम का शुभारंभ बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात साध्वी सिद्धार्थश्रीजी एवं साध्वी दर्शितप्रभाजी ने अलग-अलग राउंड में प्रश्नोत्तरी रखी।

साध्वीश्रीजी ने बहनों को बताया कि हमारा भविष्य शुभ कैसे हो सकता है? क्या-क्या ऐसी चीजें हैं हमारे व्यवहारिक जीवन में, धार्मिक जीवन में आध्यात्मिक जीवन में, जिससे हम अपने भविष्य को सुनहरा बना सकते हैं, ऐसे अनेक छोटे-छोटे विषयों पर साध्वीश्रीजी ने बहनों को प्रेरणा दी। बहनों ने भी अपने विचार रखे कि ऐसी हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में क्या अच्छी चीजें हैं, जिससे हम ग्रहण करके हमारा भविष्य सुनहरा बना सकते हैं।

कार्यक्रम में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य माला कातरेला ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम की संयोजिका प्रवीणा दुगड़ और अर्चना कटारिया थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी बहनों का भरपूर सहयोग रहा कार्यक्रम का कुशल संचालन शांति दूधोरिया ने किया और धन्यवाद ज्ञापन प्रवीणा दुगड़ ने दिया।



जीवन यापन के लिए आपसी संबंध मधुर हो : युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण



कांदिवली, 15 जून 2023

बोध प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमणजी के कांदिवली में तीसरे दिन के प्रवास पर पूज्यवर की सन्निधि में बौद्ध धर्म के विपर्सनाचार्य राहुल बोधिजी का आगमन हुआ। परम पूज्य आचार्य प्रवर ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि जीवन को चलाने के लिए, टिकाये रखने के लिए हमें अनेक प्रवृत्तियां करनी पड़ती है। इस जीवन को टिकाने के लिए हवा, पानी, रोटी, कपड़ा

आदि चाहिये। इधर आपसी संबंध भी चाहिये।

साधु तो सबन्धातीत होते हैं, संयोग से मुक्त होते हैं। गृहस्थ जीवन से ऊपर उठ जाते हैं। साधु अणगार भिक्षु होते हैं। साधु को अनासक्त रहना चाहिये। गृहस्थ को भी संसार में रहते हुए जितना हो सके अनासक्त रहना चाहिये। भोजन के लिए तन नहीं है, तन के लिए भोजन है, ऐसा अनासक्त भाव रहे। जैन दर्शन में आत्मा शाश्वत है तो

पर्याय-परिवर्तन को भी स्वीकार किया गया है। कोरी आत्मा है या कोरा शरीर है तो जीवन नहीं होता है। आत्मा का शरीर से अलग हो जाना निर्वाण-मोक्ष है। अनासक्ति है तो बंधन नहीं होगा और होगा तो भी हल्का होगा। शास्त्र में मिट्टी के गीले गोले और सुखी मिट्टी के गोले से आसक्ति-अनासक्ति को समझाया गया है। जैन धर्म और बौद्ध धर्म के ग्रंथों में कितने-कितने धर्म के संदेश प्राप्त होते हैं।

ज्ञान के साथ आचार व्यवहार में आये। संस्कार का पुल चाहिये। हमारे शास्त्रों की वाणी कल्याणी होती है। जैन और बौद्ध धर्म का निकट का संबंध रहा है। पुनर्जन्म अध्यात्म का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है। हमारा पुनर्जन्म न हो, ऐसी साधना करें। अध्यात्म की साधना के सामने दूसरी चीजें छोटी पड़ती है। जो विषयों में आसक्त है, उसके कर्म चिपक जाते हैं। कमल पत्र की तरह संसार में रहते हुए भी अलिप्त रहें। भौतिक जगत शाश्वत शांति नहीं दिला सकता। अध्यात्म का मार्ग शाश्वत शांति दिलाने में सक्षम है। हम चिंतन-मंथन कर आगे बढ़ने का प्रयास करें। राहुल बोधि जी से कई वर्षों बाद मिलना हुआ है। आप अध्यात्म-धर्म का अच्छा काम करवाते रहें। दोनों की ओर से ग्रंथों का आदान-प्रदान हुआ।

विपर्सनाचार्य राहुल बोधि जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमणजी का पैदल भ्रमण लोगों का सुख-शांति पहुंचाने के लिये होता है। मैं उनसे मिलकर आनंद और ऊर्जा महसूस कर रहा हूँ। तेरापंथ से हमारा मैत्री का संबंध है। हम मन, वचन और काया का संवर करें। मनुष्य जन्म महादुर्लभ होता है। इसको

पाकर साधना के मार्ग पर आगे बढ़ें। संप्रदाय में फर्क हो सकता है पर उच्च धर्म सब में समान होते हैं। अच्छा बनना अपने हाथ में है।

साध्वीवर्याजी ने कहा कि समय परिवर्तन होता है, जो दो प्रकार का होता है- सहज परिवर्तन और पुरुषार्थ द्वारा परिवर्तन। अध्यात्मवादियों का चिंतन है कि प्रयत्न से व्यक्ति के स्वभाव में परिवर्तन लाया जा सकता है। पूज्यवर के प्रवचन से कितने लोगों को दिशा मिल जाती है और उनकी दशा बदल जाती है।

पूज्यवर की अभिवंदना में मलाड महिला मंडल, कन्या मंडल, प्रेक्षा प्रशिक्षिका विमला दूगड़, अशोक नगर प्रेक्षाध्यान केन्द्र के प्रेक्षा साधकों ने गीत प्रस्तुत किये। तेरापंथ महिला मंडल, मुंबई की अध्यक्ष रचना हिरण, आचार्य महाश्रमण चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, डॉ. गौतम भंसाली आदि ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

विपर्सनाचार्य राहुल बोधि जी का व्यवस्था समिति द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

संयम की साधना से गृहस्थ के जीवन में भी साधुपन आ सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण



कांदिवली, 13 जून 2023

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी तीन दिवसीय प्रवास हेतु आज प्रातः मुंबई के उपनगर कांदिवली स्थित तेरापंथ भवन पधारे। आचार्यश्री महाश्रमणजी भी लगभग 20 वर्ष पूर्व यहां पधारे थे।

अमृत वर्षा कराते हुए परम पावन ने फरमाया कि आदमी एक चिंतनशील प्राणी है। उसमें विवेकशक्ति भी होती है। बुद्धिमता का एक सिद्धांत बताया गया है कि

थोड़े के लिए बहुत को नहीं खोना। जिस काम में लाभ हो या थोड़ा नुकसान लाभ ज्यादा हो, वह काम आदमी करे। जिसमें लाभ है ही नहीं या थोड़ा लाभ व ज्यादा हानि हो, वह कार्य करना बुद्धिहीनता की बात हो जाती है। एक तपस्वी साधु है, जिसके पास साधना, शील, संयम है, उसका बड़ा लाभ होता है। जो साधु भौतिक सुखों के लिए साधुत्व को छोड़ देता है, पुनः गृहस्थावस्था में चला जाता है, तो उसने थोड़े सुख के लिए कितनी बड़ी संपदा छोड़

दी। साधु की साधना रूपी संपदा के सामने भौतिक अमूल्य रत्न भी तुच्छ है। साधु के लिए निदान करना भी थोड़े के लिए बहुत खो देना हो जाता है।

गृहस्थ को भी भावों में साधुपन आ सकता है। गृहस्थ अवस्था में भी जितनी संभव हो संयम की साधना करने का प्रयास करना चाहिये। श्रावकत्व भी अच्छा आ जाता है। बारह व्रती और सुमंगल साधना से भी संयम की साधना हो सकती है। श्रावक धर्म आराधक के साथ धर्म प्रभावक भी हो

सकता है। साधु भी कई धर्म प्रभावक होते हैं। गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत के द्वारा मानव के उत्थान का कार्य किया था और आज भी अणुव्रत के कार्य चल रहे हैं। आचार्यश्री महाश्रमणजी के साथ मैं भी पहले यहां आया था। तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम भी उनकी सन्निधि में आये थे।

मुंबई समाज में खूब अच्छी धर्म की जागृति बनी रहे। अवसर का अच्छा लाभ उठाने का प्रयास होता रहे। साध्वी

विद्यावतीजी 'द्वितीय', साध्वी सोमलताजी एवं साध्वी संयमलताजी के सिंघाड़ों ने पूज्यवर के दर्शन किये।

साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि जब आचार्यश्री महाश्रमणजी से राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम की यहां मुलाकात हुई थी तो उन्होंने कहा था कि मुझे यहां एक नया प्रकाश और ऊर्जा मिली है।

आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अध्यात्म का निज़र प्रवाहित किया था। पूज्यवर भी यहां पुष्कल संवर्ध महामेघ बनकर आये हैं। आपकी ऊर्जा से यहां वर्षों-वर्षों तक आध्यात्मिक सिंचन मिलेगा।

पूज्यवर की अभ्यर्थना में साध्वी विद्यावतीजी 'द्वितीय', साध्वी सोमलताजी, साध्वी संयमलताजी के सिंघाड़ों ने अपने भावों व गीत से अभिव्यक्तियां दी।

पूज्यवर के स्वागत में तुलसी-महाश्रमण फाउंडेशन के अध्यक्ष विनोद बोहरा एवं स्थानीय आमदार प्रकाश सुर्वे ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल एवं तेरापंथ समाज, कांदिवली ने अलग-अलग स्वागत गीत प्रस्तुत किये। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों द्वारा सुन्दर प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

मायानगरी मुम्बई में महातपस्वी महाश्रमण के नागरिक अभिनंदन में उमड़ा जनसैलाब

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस सहित विभिन्न धर्मगुरुओं की रही उपस्थिति

धर्म के सान्निध्य में सबका मंगल हो : शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण

गोरेगांव, मुम्बई, 17 जून 2023

शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी मलाड में स्थित विट्टी इण्टरनेशनल स्कूल से प्रातःकाल मंगल बेला में विहार कर नेस्को ग्राउण्ड पधारे, जहाँ मानवता के मसीहा का मायानगरी की ओर नागरिक अभिनंदन समारोह आयोजित था। ज्योतिचरण का अनुगमन करते श्रद्धालुओं के साथ मुम्बई के हर क्षेत्र, वर्ग, जाति, धर्म, संप्रदाय के लोग भी आकर्षक परिधानों में सुसज्जित होकर निर्धारित गंतव्य की ओर बढ़ रहे थे। चारों दिशाओं से उमड़ती जनता का एक ही गंतव्य था- नेस्को ग्राउण्ड। जन-जन पर आशीष वृष्टि करते हुए आचार्यश्री निर्धारित समय से पूर्व ही नेस्को ग्राउण्ड पहुँच गए।

आचार्यश्री महाश्रमणजी मंचासीन हुए तो पूरा नेस्को ग्राउण्ड का विशाल परिसर जयघोषों से गुंजायमान हो उठा। मायानगरी मुम्बई की धरा पर मुम्बई की जनता की ओर से आयोजित जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, मानवता के मसीहा आचार्यश्री महाश्रमणजी के नागरिक अभिनंदन समारोह का शुभारंभ आचार्यश्री के मंगल महामंत्रोच्चारण से हुआ।



नागरिक अभिनंदन समारोह में उपस्थित विशाल जनमेदिनी को सम्बोधित करते हुए युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि दुनिया में सब लोग मंगल की कामना करते हैं। हर व्यक्ति स्वयं की मंगलकामना करने के साथ ही दूसरों के प्रति भी मंगलकामना व्यक्त करता है। जैन धर्म में सबसे उत्कृष्ट मंगलकारी धर्म को

बताया गया है। अहिंसा, संयम और तपस्वी धर्म सबसे उत्तम मंगल हैं। हर धर्म के धर्मावलम्बी के लिए इन तीनों नियमों का पालन करना ही धर्म है। जिसके भी जीवन में इन तीनों का प्रभाव होता है, उसका जीवन मंगलमय हो जाता है। जिसका मन सदा धर्म में ही रमा रहता है, देवता भी उसे नमस्कार करते हैं। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को

अपने जीवन में अहिंसा, संयम और तप के विकास का प्रयास करना चाहिए। धर्म के सान्निध्य में रहने से सबका मंगल होगा।

वर्ष 2023 के चतुर्मास के लिए मुम्बई में आना हुआ है। हमारे साथ मुख्यमुनि, साध्वीप्रमुखा और साध्वीवर्या आदि साधु-साध्वियां भी हैं। मैं मुंबई सहित पूरे महाराष्ट्र की

जनता के प्रति आध्यात्मिक मंगल की कामना करता हूँ। महाराष्ट्र के सभी लोगों तथा मुंबईवासियों के जीवन में शांति, मैत्री, सद्भाव, नैतिकता और धर्म का प्रभाव बना रहे। आचार्यश्री ने समारोह में उपस्थित लोगों को अणुव्रत यात्रा के उद्देश्यों सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के विषय में समझाते हुए उनसे इन संकल्पों को अपने जीवन में स्वीकार करने का आह्वान किया तो सबने अपने स्थान पर खड़े होकर यह संकल्प लिया। जीवन में कभी किसी को कष्ट न पहुँचाए। दूसरों का कल्याण करें। ऐसा कोई भी काम न करें जिससे मनुष्य मात्र ही नहीं बल्कि पशु-पक्षियों सहित किसी भी प्राणी को कष्ट पहुँचे। इससे आपके जीवन में सदा सुख व शांति रहेगी। यह दृश्य जन-जन के मन को हर्षित करने वाला था।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के उपरान्त एक बार पुनः अभिनंदन का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। जी बिजनेस के एडिटर एंड एमडी अनिल सिंघवी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण का ऐतिहासिक चातुर्मास पाकर मुंबई व महाराष्ट्र की जनता धन्य हो गई है।

शेष पृष्ठ 3 पर



कल्याण और पाप के ज्ञान के बाद वही करें जो श्रेय, श्रेष्ठ और हितकर हो : आचार्यश्री महाश्रमण



गोरेगांव, 18 जून 2023

गोरेगांव स्थित बांगुर नगर के बांगुर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में बने महावीर समवसरण में प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए संयम के शिखर पुरुष आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि हम पंचेन्द्रिय प्राणी हैं। पंचेन्द्रिय प्राणी है तो श्रवण शक्ति-स्रोतेन्द्रिय भी हमारे होती है। कान से आदमी सुनता है। यह श्रवण शक्ति ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम बनती है। कितनी-कितनी जानकारियां आदमी सुन कर प्राप्त कर लेता है। आंख से देखकर भी अनेक जानकारियां प्राप्त कर ली जाती है। एक समय में लिखित

साहित्य इतना उपलब्ध नहीं था तब ज्ञानियों-संतों के द्वारा सुन-सुनकर ज्ञान प्राप्त कर लिया जाता था। सुनकर अच्छी बात को जाना जा सकता है तो पाप को भी जाना जा सकता है। कल्याण और पाप को जान लेने के बाद करना वही चाहिये जो श्रेय, श्रेष्ठ और हित करने वाला हो। श्रोता वक्ता से अनुबंधित होता है, वक्ता श्रोता से नहीं।

श्रवण शक्ति का हम अच्छा उपयोग करें। कोई ग्राह्य बुद्धि से लेने वाला हो तो वक्ता का वक्तव्य सार्थक हो सकता है। श्रवण और भाषण का आपस में संबंध है।

शेष पृष्ठ 3 पर